IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, March 2020
Impact Factor: 4.819

# हिन्दी जाति की अवधारणा और रामविलास शर्मा : समीक्षात्मक अध्ययन - 3

**डॉ. अजय कुमार विन्द**
असि. प्रो. हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

भारतेन्दु जिस तरह के वातावरण में यह आह्वान कर रहे थे कि 'परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो' एक लगभग उसी तरह के वातावरण में और उसी शैली में डॉ. शर्मा कहते हैं कि 'मैं बार-बार कहता हूँ कि अगर भारत को संकट से उबारना है और अमेरिका को सबक सिखाना है कम्युनिज्म को आगे बढ़ाना चाहिए।' बहुत से बुद्धिजीवी आज सिर्फ ऐसा सोचते होंगे, पर कहने का साहस किया डॉ. शर्मा ने। उन्होंने हिन्दी जाति की अवधारणा को प्रमुखता से रखते हुए कहा है कि हिन्दी-जाति का जो आज अलगाव है और जो ब्रिटिश काल की देन है, वह अलगाव दूर हुए बिना हिन्दी जाति को अनेक समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल सकती। अंग्रेजी शासन ने भारतीय संस्कृति का पतन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'मिथिला में विद्यापति और आगरा में रहीम का साहित्य एक ही हिन्दी जाति का साहित्य है। अवधी में जायसी और तुलसी साथ हैं, ब्रज में सूर और रसखान साथ हैं। यह परम्परा अपभ्रंश से चली आई है। सरहपा, पुष्पदन्त और अब्दुल रहमान तीनों गैर-दरबारी परम्परा के कवि हैं। सरहपा बौद्ध हैं, पुष्पदन्त जैन हैं, अब्दुल रहमान किसी पन्थ या सम्प्रदाय से न होकर लोक संस्कृति के अंग हैं। इस परम्परा का नाश अंग्रेजी राज में हुआ।'17

डॉ. शर्मा की 'हिन्दी-जाति' सम्बन्धी अवधारणा को सभी लोगों ने स्वीकार कर ही लिया हो ऐसा नहीं है। असहमतियाँ सामने आयी हैं। अब हम देखते हैं कि अन्य विचारक उनकी इस अवधारणा के विषय में क्या कहते हैं-

**कुँवरपाल सिंह** :- हिन्दी जाति के प्रश्न पर कुछ बिन्दुओं को छोड़कर मेरी असहमति है। यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि जब बंगला, मराठी, तमिल, तेलगू आदि की स्वतंत्र राष्ट्रीयता और जातीयता है तो हिन्दी की ही क्यों सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है? अन्य भारतीय भाषाओं की तरह हिन्दी का संसार भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अलग रहा है। फिर इस क्षेत्र में कई भाषाएँ (अब उपभाषाएँ) बहुत सम्पन्न रही हैं। इस दृष्टि से ब्रजभाषा, मैथिली, अवधी और राजस्थानी का नाम लिया जा सकता है। आधुनिक हिन्दी (खड़ी बोली) शहरी मध्यवर्ग की भाषा है और विभिन्न उपभाषाओं के बीच सम्पर्क भाषा। यदि हिन्दी जाति का आन्दोलन और अधिक दिनों तक चलेगा तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। चूँकि अब तक तो मैथिली और राजस्थानी को अलग भाषा के रूप में स्वीकार किया है। माँग तो भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, कुमाऊँनी और गढ़वाली के लिए भी उठ रही है। इसलिए यह सवाल भाषा विज्ञान और व्याकरण के नियमों से नहीं सुलझाया जा सकता। इसके पीछे मानवीय सरोकार और जनभावनाएँ हैं। यही कार्य मराठी भाषी लोगों ने कोंकणी के साथ किया। आज गोवा में मराठी भाषा का नाम लेने वाले बहुत कम लोग हैं। गोवावासी द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं मराठी का नहीं।

फिर उर्दू का क्या होगा, उर्दू भी सशक्त भाषा है, इसी प्रदेश की भाषा है। इसका उद्भव और विकास हिन्दी प्रदेश में ही हुआ। हिन्दी जाति के समर्थकों में इस प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया कि हिन्दी की अवधारणा में उर्दू का क्या स्थान है। क्या वह अलग भाषा नहीं है। यदि हिन्दी की एक शैली है तो हिन्दी के पाठ्यक्रमों में उसे शामिल क्यों नहीं किया जा रहा। हिन्दी साहित्य के

इतिहास में ब्रज, अवधी, मैथिली और राजस्थानी के साथ उर्दू को क्यों नहीं शामिल किया गया? हमारी सद्विच्छा, भावना कुछ भी हो जो हिन्दी प्रदेशों की ऐतिहासिक वास्तविकता है, उससे मुँह नहीं मोड़ सकते। हिन्दी प्रदेश भी विविधताओं में एकता का नमूना है।18

**अजय तिवारी** :- मैंने इस पर पहले बात की है। गण, समाज, लघु जातियों या जनपद और महाजातियाँ या राष्ट्रीयताएँ। सामाजिक विकास का यह क्रम है। आप हिन्दी साहित्य के इतिहास में मैथिली के विद्यापति से लेकर राजस्थान की मीराबाई तक सबको पढ़ते-पढ़ाते हैं, तो ये एक हिन्दी क्षेत्र की धारणा है या नहीं? इसी सत्य को सामाजिक जीवन में आप स्वीकार करना नहीं चाहते। हिन्दी जाति, ये जातिवाद, वर्ण-व्यवस्था और साम्प्रदायिकता तीनों का प्रत्युत्तर है, क्योंकि हिन्दी संस्कृति का निर्माण केवल हिन्दुओं ने नहीं किया और केवल द्विजों ने नहीं किया। इस संस्कृति के निर्माण में अनेक धर्मावलम्बियों का, समाज के अनेक वर्गों और स्तरों का योगदान है। इसमें किसानों का, श्रमिकों का, स्त्रियों का, मुसलमानों का बहुत योगदान है। अगर आप हिन्दी के सारे कवियों को देखेंगे तो जो सवर्ण कवि थे वे आर्थिक रूप से समाज के किस वर्ग के थे? रामविलास जी की हिन्दी जाति की जो धारणा थी उसके पीछे साहित्य का, राजनीति का, दर्शन का, इतिहास का सारा अध्ययन है। उन्होंने मानव संगठन का नयी परिस्थितियों में समाज संगठन का, नया रूप प्रस्तुत किया है, उसकी चेतना है हिन्दी जाति। इस बात से इंकार करके और हिन्दी जाति को विघटित करके हम राष्ट्रीय एकता के रास्ते में रोड़े अटकाते हैं।19

**रामचन्द्र तिवारी** :- डॉ. शर्मा ने 'हिन्दी जाति' के सम्बन्ध में विस्तार से विचार किया है। 'जाति' का प्रयोग वे लगभग 'नेशन' के अर्थ में करते हैं। उनकी दृष्टि में जैसे मराठी, बंगला, तमिल आदि जातियाँ हैं, वैसे ही 'हिन्दी' की एक जाति है। 'हिन्दी-जाति' का भी एक हिन्दी भाषी क्षेत्र है। जैसे 'बंगला जाति' की भावना को ऊपर करने से धर्म, सम्प्रदाय आदि के भेद बंगाल में दब गए हैं। वैसे ही

'हिन्दी जाति' की भावना को ऊपर करने से हिन्दी प्रदेश में भी धर्म और सम्प्रदाय का भेद दब जाएगा। हिन्दी-जाति के भीतर वे 'उर्दू' को भी समाविष्ट करते हैं। उनकी यह स्थापना आज के माहौल को देखते हुए कम-से-कम हिन्दी-प्रदेश में व्यावहारिक प्रतीत नहीं होती। उर्दू-भाषी अपने को 'हिन्दी जाति' के अन्तर्गत स्वीकार नहीं कर सकते। स्वयं मार्क्सवादियों में इस प्रश्न पर मतैक्य नहीं था। इसलिए चिंतन के स्तर पर 'हिन्दी जाति' की अवधारणा चाहे जितनी उपयोगी लगे व्यवहार में इसकी चरितार्थता संदिग्ध है।20

**मधुरेश** :- हिन्दी जाति के निर्माण में रामविलास शर्मा की धारणा के पक्ष-विपक्ष में काफी कुछ कहा जाता रहा है। इस अवधि से जुड़े रामविलास शर्मा के अनेक पूर्वाग्रह भी इसे विवादास्पद और अव्यावहारिक बनाते हैं। वैसे भी वह निर्दोष अवधारणा नहीं है जैसी ऊपर से दिखाई देती है।21

**अमरनाथ** :- हिन्दी जाति की अवधारणा रामविलास जी की सबसे महत्वपूर्ण स्थापनाओं में से एक है। परिश्रमी और पराक्रमी स्वभाव तथा अपने शौर्यपूर्ण अतीत के बावजूद आज हिन्दी जाति अत्यन्त पिछड़ी, जाति-सम्प्रदायवाद तथा तरह-तरह के ढोंग-पाखंड में फंसी है। जातीय चेतना का अभाव इसका सबसे बड़ा कारण है। रामविलास जी ने इसका विस्तृत अध्ययन किया था। उन्होंने देखा कि सन् सत्तावन का स्वाधीनता आन्दोलन हिन्दी क्षेत्र में ही लड़ा गया था। अंग्रेजों ने इससे सबक लिया और हिन्दी जाति को हर तरह से दबाया, तोड़ा, काउबेल्ट कहकर उपेक्षित किया, उसकी जातीय भाषा को हिन्दी-उर्दू में बाँटा, उसे मजहब से जोड़ा और इस तरह उसकी शक्ति को क्षीण किया। आजादी के बाद भी हिन्दी क्षेत्र को कई प्रान्तों में बाँट दिया गया। इससे हिन्दी जाति लगातार कमजोर होती गई। जातीय चेतना ही इस हिन्दी जाति को पुनः उसका गौरव दिला सकती है। इसलिए रामविलास जी की हिन्दी जाति की अवधारणा बिल्कुल सही दिशा है। हाँ, समूची हिन्दी जाति के लिए एक प्रान्त बनाने की उनकी अवधारणा मुझे व्यावहारिक नहीं लगती।22

**मैनेजर पाण्डेय** :- एक तो रामविलास जी की हिन्दी जाति और हिन्दी नवजागरण की धारणाओं के विकास का ऐतिहासिक संदर्भ है और सन्दर्भ यह है कि पिछले सौ वर्षों में भारतीय नवजागरण और भारतीय समाज के बारे में जो विचार होता रहा है उसमें एक दृष्टिकोण बना हुआ था कि एक बंगला जाति तो है, उसका एक नवजागरण भी है, मराठी जाति का भी एक नवजागरण है, पर हिन्दी जाति का कोई नवजागरण है इस पद पर बात नहीं होती थी। रामविलास जी का योगदान यह है कि उन्होंने जोर देकर यह बात कही और विस्तार से इसको साबित करने की कोशिश की कि हिन्दी जाति है और उसका अपना एक नवजागरण है। मुझे उनका यह योगदान महत्त्वपूर्ण लगता है। जरूरी यह है कि हिन्दी जाति की अवधारणा को इसकी समस्त जटिलताओं और अंतर्विरोधों के साथ समझा जाये। यह पुराना मार्क्सवादी सिद्धान्त है कि एक भाषा और उस भाषा के बोलने वाले समाज को मोटे तौर पर एक जाति के रूप में माना जाता है। बंगला या मराठी के प्रसंग में यह सही है। हिन्दी जाति के प्रसंग में इसमें एक बाधा है। इस क्षेत्र में दो भाषाएं हैं, हिन्दी और उर्दू इसलिए एक भाषा और जाति का सिद्धान्त हिन्दी के प्रसंग में सही नहीं है। आप उर्दू की उपेक्षा करके हिन्दी जाति को नहीं समझ सकते। अगर इसकी उपेक्षा करके आप हिन्दी जाति को समझेंगे तो इससे दो खतरनाक निष्कर्ष निकलेंगे। एक तो बिना कुछ कहे उर्दू को आप मुसलमानों के साथ जोड़ देंगे और तब एक अलग जाति भी आपको माननी होगी। दूसरी बात यह कि हिन्दी भाषा हिन्दू समुदाय से जुड़ जायेगी। रामविलास जी जिस प्रकार का खतरनाक विभाजन न चाहते थे न उन्होंने ऐसा किया है। फिर भी चूँकि वे उर्दू को हिन्दी जाति की एक भाषा नहीं मानते थे इसलिए न चाहते हुए भी कुछ लोग ऐसे निष्कर्ष प्राप्त कर लेते हैं। यही कठिनाई है हिन्दी जाति की, उसके नवजागरण की बात करना महत्त्वपूर्ण है लेकिन इस जटिल स्थिति को समझना भी जरूरी है जिसकी रामविलास

जी ने लगभग उपेक्षा की है। वे एक ओर उर्दू को हिन्दी की एक शैली मानते हैं लेकिन दूसरी ओर 'हिन्दी जाति का साहित्य' पुस्तक में उर्दू भाषा और उसके साहित्य का इतिहास शामिल नहीं करते।23

अंततोगत्वा कहा जा सकता है कि डॉ. रामविलास शर्मा केवल हिन्दी साहित्य के विचारक नहीं हैं, वे हिन्दी जाति के विचारक हैं, जो हिन्दी के माध्यम से अपनी भाषा के चिन्तन पक्ष को अनुसंधान और नए सांस्कृतिक मूल्यों से अर्थवान् बनाते हैं। किसी भाषा की जातीय समृद्धि तभी हो पाती है, जब उसमें मौलिक रूप में अद्यतन ज्ञान-सर्जना हो पायी हो। डॉ. शर्मा की यह सबसे बड़ी भूमिका है कि वे कोटिजनों की भाषा को अपनी सत् ज्ञान साधना से चिंतन समृद्ध करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आजकल : मई 2002, रामविलास शर्मा विशेषांक-सं. बलदेव सिंह मदान, प्रकाशन विभाग, लोदी रोड़, नई दिल्ली, पृ. 32

2. कल के लिए : अप्रैल-जून 2002, अंक-2, रामविलास शर्मा विशेषांक-सं. जयनारायण, अनुभूति विकास भवन, बहराइच, उ.प्र., पृ. 26

3. वही, पृ. 26

4. वही, पृ. 26

5. वही, पृ. 26

6. वही, पृ. 26

7. वही, जनवरी-मार्च 2002, अंक-1, पृ. 22-23